IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

भास के रूपकों में दुर्योधन-चरित्रः एक तुलनात्मक अध्ययन

डॉ० ऋचा रानी
द्वारा श्री लक्ष्मण झा
कैलाशपुरी वार्ड न०- 09
(मस्जिद घाट के सामने)
पो० – डुमरा
जिला- सीतामढ़ी (बिहार)
पिन- 843301

संस्कृत नाटक साहित्य में भास अद्वितीय नाटककार के रूप में प्रतिष्ठित हैं | भास रचित तेरह नाटक उपलब्ध होते हैं जो भासनाटकचक्र में परिगणित हैं | इनका विषय-क्षेत्र अत्यंत व्यापक है | महाभाराताश्रित रूपकों में दूतवाक्य, कर्णभार, पंचरात्र, मध्यमव्यायोग, दूतघटोत्कच और ऊरुभंग उल्लेखनीय हैं | दुर्योधन एक ऐतिहासिक पात्र है | किंतु तुलनात्मक दृष्टि से 'पंचरात्र' और 'ऊरुभंग' का दुर्योधन भास की मौलिक सृष्टि है |

यह निर्विवाद सत्य है कि रूपकों की कथावस्तु का मूलाधार चरित्र ही है | चरित्र ही कथावस्तु में जीता है, वही उसे प्रवाह में सहायता देता है और समापन में लक्ष्य को

भी प्रधान चरित्र ही प्राप्त करता है | वस्तुतः नाटककार का आभिप्रेत इतिवृत्त कथा का प्रणयन मात्र नहीं होता, बल्कि कथानकों के चरित्र से समाज को उचित दिशा निर्देशन प्रदान करना होता है | इस महदुद्देश्य की पूर्ति के लिए भास ने मूल कथा की वास्तविक घटनाओं में यथावश्यक परिवर्तन कर दुर्योधन के चरित्र को 'पंचरात्र' में उदार एवं 'ऊरुभंग' में पूर्णतया भिन्न बना दिया है |

दुर्योधन के यज्ञ की कथा महाभारत के वनपर्वान्तर्गत 'घोषयात्रा पर्व' में मिलती है | किन्तु 'पंचरात्र' में वर्णित यज्ञ समृद्धि का यहाँ आभाव है | दुर्योधन यज्ञोपरांत राज्यलोभी तथा पांडवों के प्रति पूर्ववत निष्ठुर दिखाई देता है | उदाहरण स्वरुप –

'कुरुकुल' के राजकुमारों ! कब ऐसा समय आएगा जब मैं समस्त पांडवों को मारकर प्रचुर धन से संपन्न होने वाले उस क्रतुश्रेष्ठ राजसूय यज्ञ का अनुष्ठान करूँगा |' [1]

अज्ञातवास का आधिकांश समय बीतते देखकर दुर्योधन चिंतित हो जाता है | सभासदों से उनका पता लगाने का प्रयत्न करता है "आपलोग शीघ्र उनका पता करने की चेष्टा करें, जिससे वे क्रोध को दबाकर उतने ही समय के लिए फिर वन में चले जाएँ | ऐसा होने पर ही मेरा यह राज्य दीर्घकाल के लिए व्यग्रताशून्य तथा निष्कंटक हो जायेगा |" [2]

पंचरात्र का नायक दुर्योधन प्रारंभ से ही उदार और मानवीय प्रतीत होता है | यज्ञानुष्ठान संपन्न करके वह अलौकिक आनंद का अनुभव करता है | साथ ही वह अपनी त्रुटियों को स्वीकार करता है | इसकी यह आत्म-जागृति उल्लेखनीय है – " आज मेरी आत्मा श्रद्धालु हो रही है, गुरुजन प्रसन्न हो रहे हैं, संसार मुझपर विश्वास कर रहा है, मेरे कलंक धुल गए, लोगो का यह कहना की स्वर्ग मरने पे मिलता है – गलत है, यही मुझे बहुगुण स्वर्ग- आनंद मिल रहा है |" [3]

गुरु द्रोणाचार्य के प्रति उसकी भक्ति और समर्पण 'पंचरात्र' में दर्शनीय है |

दक्षिणा स्वरुप उसके वचन शिष्यत्व का अद्भुत उदाहरण है –

"यदि आप मेरी प्राक्तन कुटिलता पर ध्यान देते हैं और यदि आपका यह विचार है कि दुर्योधन मेरी इच्छा नहीं पूर्ण करेगा, तो लाइए अनेकधा बाणग्रहण से कठोर अपना हाथ आगे बढाइए यह, दानवीर ही इस दान का साधन बने |" [4]

द्रोणाचार्य सुअवसर पाकर अपनी दक्षिणा में पांडवों के लिए राज्यार्ध की याचना करते हैं | शकुनि दुर्योधन को इसके खिलाफ भड़काता है | दुर्योधन उसकी सलाह को यहाँ अस्वीकार करता है –

" मामाजी आपको कहना चाहिए की देना उचित है |"[5] उसका दृढनिश्चय उसे महाभारत के दुर्योधन से भिन्न करता है – " मैंने गुरुदेव के हाथ में जल छोड़ दिया है यह दान का प्रमाण है ऐसा कुलवृद्धों ने शास्त्रों से जाना है तथा मैंने उनसे सुना है, इसलिए हे राजन चाहे वह अनीति हो या ठगी हो, मैं इस दानजल को सच्चा करना ही चाहता हूँ |"[6]

महाभारत में दुर्योधन स्वयं मत्स्यराष्ट्र पर आक्रमण करने की योजना बनाता है | कीचक-वध तथा मत्स्यराष्ट्र के अन्य गुणों को दूतों से जानकर उसे पांडवों के वही होने की संभावना दिखाई देती है इसीलिए वह षडयंत्र रचता है –

" हमलोग वहां चलकर मत्स्यराष्ट्र को नष्ट करेंगे तथा राजा विराट के गोधन पर अपना अधिकार कर लेंगे | उनके गोधन का अपहरण कर लेने पर निश्चय ही पांडव हम लोगों के साथ युद्ध करेंगे | ऐसी दशा में यदि अज्ञातवास का समय पूर्ण होने से पूर्व ही हम पांडवों को देख लेंगे, तो उन्हें पुनः बारह वर्षों के लिए वन में प्रवेश करना पड़ेगा |" [7]

पंचरात्र में यह प्रसंग परिवर्तित है भास ने भीष्म के द्वारा विराट के गोधन – हरण की योजना बनवाई है | जिससे दुर्योधन का कलंक कुछ कम हो जाता है | भीष्म पांडवों को प्रकाश में लाने के लिए दुर्योधन को परामर्श देते हैं –

" पौत्र दुर्योधन हमलोगों का विराट के साथ गुप्त शत्रुत्व है ही, तुम्हारे यज्ञ में भी वह सम्मिलित होने नहीं आए, आतः उनका गोधन हरण कर लो |" [8]

गोग्रहण युद्ध में दुर्योधन को अभिमन्यु के अपहरण की सूचना मिलती है | दुर्योधन उससे छुड़ाने के लिए तत्पर हो जाता है – " मुझे उसके पिता से वैर ठना हुआ है जो दायाद का वैर है , इसलिए उसके पकडे जाने पर लोग मुझे ही दोषी कहेंगे, इसके अतिरिक्त पहले वह मेरा लड़का है, बाद में पांडवों का कौलिक विरोध होने पर बालकों का अपराध नहीं माना जाता है |" [9]

महाभारत में अभिमन्यु – हरण या भीम द्वारा गोग्रहण युद्ध में बंदी बना लिए जाने का उल्लेख नहीं है | पंचरात्र में इस घटना की सृष्टि कर भास ने दुर्योधन के चरित्र का उत्कर्ष दिखाया है | अभिमन्यु की मुक्ति के लिए उसकी प्रतिज्ञा एवं इस संदर्भ में उसका तर्क प्रशंसनीय है | अभिमन्यु के अपहरणकर्ता का पराक्रम दुर्योधन को असत्य हो जाता है | इसलिए वह एक शूरवीर की भांति सूत से कहता है - "क्यूँ आप साभिमान शब्दों में किसी की स्तुति कर रहे हैं , चाहे वह वेग में पवन ही क्यों न हो |" [10]

दुर्योधन ने पांच रातों में पांडवों के मिल जाने पर राज्य देने का वचन दिया था – ' अस्तु पंचरात्रम !'[11] गोग्रहण युद्ध में राजा विराट की ओर से लड़ने वाले योद्धाओं के विषय में भीष्म, द्रोण आदि की पांडव रूप में पहचान हो जाने पर दुर्योधन सशंकित होता है | उसका विचार है – मैं राज्य का आधा भाग तभी दूंगा जब युधिष्ठिर के साक्षात दर्शन हो

जाएँ |[12] उसी समय विराट नगर से उत्तर युधिष्ठिर का सन्देश ले कर कौरवों के पास पहुँचता है | द्रोण पंचरात्र का स्मरण दिलाते हुए अपनी गुरुदक्षिणा मांगते है | दुर्योधन सहर्ष अपनी प्रतिज्ञा का पालन करता है – अस्तु मैंने पांडवों को पूर्ववत आधा राज्य दिया, यदि सत्य निरपाय रहता है तो लोग मरने के बाद भी यशः शारीर से जीवित रहते हैं |"[13]

इस प्रकार 'पंचरात्र' का दुर्योधन महाभारत की तुलना में अत्यंत उदार है | धर्म में उसकी गहरी आस्था है | गुरुजनों का वह सम्मान करता है | पांडवों से वैर होने पर भी अभिमन्यु के प्रति स्नेहशील है | गुरु द्रोणाचार्य को दिए गए वचन का वह अक्षरशः पालन करता है | महाभारत में जो निरंतर कहता रहा – " सूच्याग्र नैव दास्यामि विना युद्धेन केशव |"[14] वही इस रूपक में द्रोण के आग्रह तथा अपनी दान- प्रतिज्ञा को पूरी करने के लिए आधा राज्य पांडवों को दे देता है |

अतः पंचरात्र का नायक दुर्योधन महाभारतीय दुर्योधन से बहुत ऊँचा है |

महाभारत का दुर्योधन और ऊरुभंग का दुर्योधन–

महाभारत में 'गदापर्व' के अंतर्गत भीम और दुर्योधन के बीच हुए गदा युद्ध का वर्णन है | दोनों महाबली और महान योद्धा हैं | दुर्योधन को धर्मयुद्ध के द्वारा जीतना असंभव था | इसीलिए भगवान् कृष्ण ने संकेत द्वारा भीम को समझाया और भीम ने दुर्योधन की जंघा पर प्रहार कर उसे असमर्थ बना दिया | दीन – हीनावस्था में पृथ्वी पर पड़े हुए दुर्योधन को भीम ठोकर मारते हैं | राजाओं द्वारा भीम की विजय की भूरि-भूरि

प्रशंसा होती है | दुर्योधन के अपमान और भीम के सम्मान में वीरों द्वारा अयोग्य बातें कही जा रही थीं | श्री कृष्ण उन्हें रोकते हुए दुर्योधन की असहाय आवस्था और कृतकर्मों का वर्णन करते हैं –

" नरेश्वरो मरे हुए शत्रु को पुनः मारना उचित नहीं है | तुम लोगो ने इस मंदबुद्धि दुर्योधन को बारम्बार कठोर वचनों द्वारा घायल किया है |" [15] यह निर्लज्ज पापी तो उसी समय मर चुका था जब लोभ में फँसा और पापियों को अपना सहायक बना कर सुहृदों के शासन से दूर रहने लगा | [16] दुर्योधन प्राणान्तक कष्ट से गुजरता हुआ भी क्रोध और ईर्ष्या से भरा हुआ है | वह कृष्ण से कहता है – ओ कंस के दास के बेटे ! मैं जो गदायुद्ध में अधर्म से मारा गया हूँ, इस कुकृत्य के कारण क्या तुम्हें लज्जा नहीं आती है ? [17] अपने पक्ष के विख्यात शूरवीरों के वध का स्मरण दिलाता हुआ वह श्रीकृष्ण को उलाहना देता है – "सरलता से धर्मानुकूल युद्ध करने वाले सहस्त्रों भूमिपालों को बहुत – से कुटिल उपायों द्वारा मरवाकर न तुम्हें लज्जा आती है न इस बुरे कर्म से घृणा होती है |" [18] कृष्ण उसे उसके प्रबल लोभ और तृष्णा के वशीभूत होकर अनुचित पाप कर्मों को विनाश का उत्तरदायी बताते हैं | इसपर दुर्योधन गर्व के साथ कहता है – "मैंने विधिपूर्वक अध्ययन किया दान दिए समुद्र सहित पृथ्वी का शासन किया और शत्रुओं के मस्तक पर पैर रख कर मैं खड़ा रहा | मेरे समान उत्तम अंत किसका हुआ है ?" [19]

ऊरुभंग की कथावस्तु महाभारत की उपर्युक्त घटना पर आधारित है | भीम के द्वारा कपटपूर्वक प्रहार किए जाने पर दुर्योधन घायल होकर असमर्थ हो जाता है | अपनी हार का कारण वह कृष्ण की चाल को ही समझता है | परन्तु इस रूपक में दुर्योधन को युद्ध से अंततः विरक्ति हो जाती है | उसे अपने किए पर पश्चाताप होता है | राग- द्वेष से परे एक भिन्न स्वरुप में वह प्रत्यक्ष होता है | उसकी पराजय से क्रुध बलदेव पांडवों के संहार का संकल्प करते हैं | दुर्योधन

उन्हें रोकता हुआ प्रार्थना करता है – " जबकि भीमसेन की प्रतिज्ञा पूरी हो चुकी है, मेरे सौ भाई स्वर्ग पहुँच गए हैं और मैं दीनावस्था में डाल दिया गया हूँ, तब हे राम ! युद्ध से क्या सिद्ध होगा |" [20]

'ऊरुभंग' का दुर्योधन माता – पिता के प्रति भक्तिभाव रखता है यह अत्यंत स्वाभिमानी तथा पितृभक्त है –

"आपके चरणों पर माथा टेकने वाला मैं जिस मान के साथ पैदा हुआ उसी मान के साथ धधकती हुई अग्नि, की भी परवाह किए बिना स्वर्ग जा रहा हूँ |" [21]

माता के प्रति अतिशय प्रेम और आदर व्यक्त करता हुआ निवेदन करता है – "मैं प्रणाम करके तुमसे कहता हूँ यदि मेरा कुछ भी पुण्य हो तो अगले जन्म में तू ही मेरी माँ बनो |" [22]

अपनी पत्नी को वह समझाता है – "---------- तुम्हारा पति युद्ध में पीठ दिखा कर नहीं मारा गया है, फिर भी हे क्षत्रियाणी ! तू क्यों रो रही है ?" [23] आसन्न मृत्युवाला दुर्योधन मानवीय मूल्यों से प्रेरित दिखाई देता है | पुत्र दुर्जय को दिए गए सन्देश में उसके हृदय की शुद्धता और भारतीय संस्कार दर्शनीय है ---

"मेरे समान ही पांडवों की भी तू सेवा करना, पूजनीया माता कुंती की आज्ञा मानना, अभिमन्यु की माता और द्रौपदी का अपनी माँ की तरह पूजन करना|" [24] अश्वत्थामा दुर्योधन की दुर्दशा देख आश्चर्य प्रकट करता है | दुर्योधन शांतचित्त होकर कहता है – "आचार्यपुत्र ! यह तो मेरे असंतोष का फल है |" [25]

अतः उपर्युक्त तुलनात्मक विवेचन के आधार पर दुर्योधन का चरित्र भास के रूपकों में अत्यंत निर्मल एवं उदार स्वरुप में सिद्ध होता है | इतिहास में अपने हठ, अहंकर, क्रूरता, स्वार्थ, निरंकुशता आदि के लिए कुख्यात दुर्योधन 'पंचरात्र' और 'ऊरुभंग' में मानवीय गुणों से ओत- प्रोत दिखाई देता है | उसका हृदय- परिवर्तन पांडवों के प्रति स्नेह एवं सहानुभूति, माता-

पिता एवं गुरुजनों के प्रति श्रद्धा भाव भास की अद्वितीय कल्पना है | भास के नाटकों के उपजीव्य इतिहास, पुराण और लोककथाएँ हैं | उनसे वस्तु तत्व ग्रहण कर भास ने अपनी निपुणता, मौलिकता और कलाविदग्धता का विलक्षण समायोजन कर रूपकों को सृजित किया |

इस दृष्टि से भास का दुर्योधन एक विलक्षण पात्र है | साहित्य में दुर्योधन का ऐसा उज्ज्वल चरित्र अन्यत्र दुर्लभ है |

संदर्भ सूची

1. महाभारत, वनपर्व 257/15
2. महा० गोहरण प० 26/ 67
3. पंचरात्र 1/23 - भास चौ० वि० वा० 2002
4. पंचरात्र 1/32
5. तत्रैव पृ० 38
6. तत्रैव 1/47
7. महा० विराट प० 29/ पृ० 1930 गीता प्रे० गोरखपुर
8. पंच० पृ० 47
9. तत्रैव , 3/4
10. तत्रैव , 3/9

11.तत्रैव , पृ० 46

12.तत्रैव , 3/21

13.तत्रैव , **3/25**

14.महा० भगवाद्यान० 127/25

15.महा० गदा 61/18,19

16.तत्रैव , 61/19,20

17.तत्रैव , 61/27

18.तत्रैव , 10/ 29,30

19.तत्रैव , 61/50,51

20.ऊरूभंग, 1/33 – भास, चौ० वि० वा० चतुर्थ संस्करण

21.तत्रैव , 1/47

22.तत्रैव , 1/50

23.तत्रैव , 1/51

24.तत्रैव , पृ० 47

25. तत्रैव , पृ० 53